हेलेन केलर

जेन सटक्लिफ, चित्र: ऐलेन

टस्कुम्बिया, अलबामा 1886

हेलेन केलर ने अपने हाथ उठाए.

उसने गर्म, मोटे बालों को छुआ.

उसकी व्यस्त उंगलियाँ और नीचे गईं.

उसे कुछ चिकना और गीला महसूस हुआ.

फिर झट से बालों वाली पूंछ ने, हेलेन के चेहरे पर एक थप्पड़ मारा!

हेलेन अपने परिवार की दूध देने वाली गाय को देख नहीं सकती थी.

लेकिन हेलेन को छूना अच्छा लगता था.

हेलेन केलर जीवन भर अंधी और बहरी रही.

वो दुनिया को केवल स्पर्श, स्वाद और गंध से ही जानती थी.

हेलेन का जन्म 1880 में टस्कुम्बिया, अलबामा में हुआ था.

जब वो बहुत छोटी बच्ची थी, तो वो बहुत बीमार पड़ गई.

बीमारी ने उसकी देखने और सुनने की क्षमता छीन ली.

हेलेन अपने भाइयों की हँसी और अपनी माँ की आवाज़ तक नहीं सुन सकती थी.

वो अपने पिता की मुस्कान या खिड़की के बाहर सुंदर फूल भी नहीं देख सकती थी.

हेलेन के जीवन में केवल सन्नाटा और स्याह अंधेरा ही था.

बोलना सीखने के लिए बच्चों को
शब्द सुनने की जरूरत होती है.

लेकिन हेलेन को कुछ सुनाई नहीं
देता था.

इसलिए वो बोल भी नहीं पाती थी.

इसके बजाय, वो इशारों और संकेतों से
बात करती थी.

जब उसे अपनी माँ चाहिए होती,
तो वो अपने को हाथ अपने चेहरे पर
रखती थी.

जब उसे अपने पिता चाहिए होते, तो
वो चश्मा पहनने का इशारा करती
थी.

जब उसे भूख लगती, तो वो डबलरोटी
के टुकड़े काटने और मक्खन लगाने
की ऐक्टिंग करती थी.

हेलेन जानती थी कि वो अपने परिवार के बाकी लोगों से अलग थी.

जब परिवार के लोग कोई चीजें चाहते, तो वे अपने होंठ हिलाते थे.

कभी-कभी जब दो लोग बात कर रहे होते तो हेलेन उनके बीच में खड़ी हो जाती थी.

वो उनके होठों पर अपनी उंगलियां रखती थी.

फिर वो अपने होठों को भी हिलाने की कोशिश करती थी.

लेकिन फिर भी, कोई उसकी बात कोई समझ नहीं पाता था.

इससे हेलेन गुस्सा हो जाती थी.

कभी-कभी वो चिल्लाती और रोती थी और घंटों लातें पटकती थी.

वो चीजें फेंकती थी और लोगों को मारती थी.

लेकिन उससे कुछ भी बदला नहीं.

वो अभी भी घोर चुप्पी और अंधेरे में अकेली रहती थी.

हेलेन को नियंत्रित करना मुश्किल था.

उसके माता-पिता को समझ में नहीं आया कि वो उसकी मदद कैसे करें.

वे उसे डॉक्टरों के पास ले गए.

पर कोई भी डॉक्टर हेलेन की फिर से देखने या सुनने में मदद नहीं कर पाया.

जब हेलेन छह साल की हुई, तो एक डॉक्टर ने केलर को, डॉ. एलेक्जेंडर ग्राहम बेल से मिलने का सुझाव दिया.

डॉ. बेल, टेलीफोन के आविष्कार के लिए प्रसिद्ध थे. उन्होंने बहरे लोगों को पढ़ाया भी था.

डॉ बेल ने मिस्टर केलर से बोस्टन में माइकल एनाग्नोस को लिखने के लिए कहा.

मिस्टर एनाग्नोस *पर्किन्स इंस्टीट्यूशन फॉर द ब्लाइंड* के प्रमुख थे.

डॉ बेल का मानना था कि हेलेन अपने अंदर बंद विचारों को बाहर निकालना सीख सकती थी.

मिस्टर एनाग्नोस ने हेलेन के लिए एक टीचर भेजने का वादा किया.

हेलेन की टीचर

मार्च 1887

हेलेन की टीचर उसके पास वसंत में रहने आईं.

उनका नाम एनी सुलिवन था.

एनी ने पर्किन्स स्कूल में पढ़ाई की थी.

वो खुद लगभग अंधी थी.

ऐनी को हेलेन के जंगली व्यवहार को नियंत्रित करने की कोशिश की ताकि वो उसे कुछ सिखा सकें.

लेकिन हेलेन को यह समझ में ही नहीं आया कि एनी उसकी मदद करना चाहती थी.

दो सप्ताह तक हेलेन ने एनी के साथ खूब लड़ाई की.

उसने एनी को मारा और उनके सामने का एक दांत तोड़ डाला.

एक दिन हेलेन ने एनी को ऊपर के कमरे में बंद कर दिया.

फिर मिस्टर केलर को एक सीढ़ी लानी पड़ी और एनी को खिड़की से बाहर निकालना पड़ा.
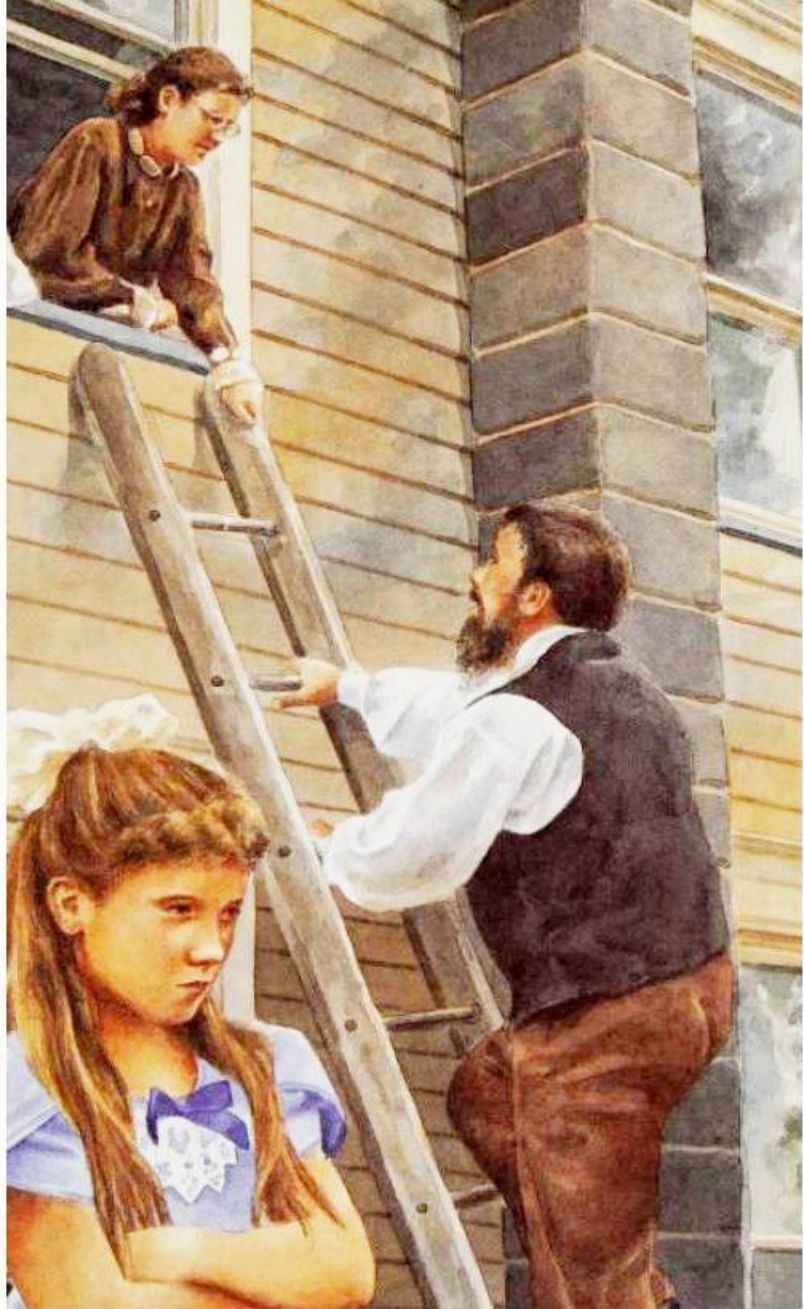
फिर भी एनी ने हार नहीं मानी.

धीरे-धीरे हेलेन ने, अपनी नई टीचर पर भरोसा करना सीखा.

ऐनी ने हेलेन को शब्दों के बारे में सिखाना शुरू किया.

उसने अपनी उंगलियों का उपयोग करके शब्दों के हिज्जे किए.

उसने हाथ से प्रत्येक अक्षर के लिए एक अलग आकृति बनाई.

उसने प्रत्येक आकृति को हेलेन के हाथ में पर दबाया.

जब उसने हेलेन को कुछ केक दिया, तो उसने हेलेन की हथेली पर C-A-K-E (केक) लिखा.

जब हेलेन ने अपनी गुड़िया पकड़ी, तो एनी ने हेलेन की हथेली पर D-O-L-L (गुड़िया) लिखा.

हेलेन ने आकृतियों की नकल की.

हेलेन को वो एक खेल लगा.

उसे नहीं पता था कि उन आकृतियों ने शब्दों की हिज्जे लिखे थे.

एक महीने के बाद, ऐनी जो भी हिज्जे लिखती, हेलेन भी उन्हें लिख सकती थी.

लेकिन हेलेन को अभी भी यह नहीं पता था कि वो जिन चीजों को छूती थी, उनका कोई नाम होता था.

एक दिन हेलेन और एनी कुएं के पास गए.

कोई हाथ के नल से पानी भर रहा था.

एनी ने हेलेन के हाथ पर बहते पानी को गिरने दिया.

हेलेन ने अपने हाथ पर ठंडे पानी को महसूस किया.

उसने महसूस किया कि उसकी टीचर की उंगलियां उसके दूसरे हाथ में W-A-T-E-R (पानी) लिख रही थीं.

बार-बार, एनी ने उस शब्द का उच्चारण किया.

अचानक हेलेन एकदम स्थिर खड़ी हो गई.

अचानक उसे समझ में आया!

उसके हाथ से बहने वाली तरल चीज़ का एक नाम था.

वो W-A-T-E-R (पानी) था!

हर चीज़ का कुछ नाम होता था!

हेलेन उन सभी को सीखना चाहती थी.

फिर वो एक चीज से दूसरी चीज की ओर भागी.

ऐनी ने हेलेन द्वारा छुई हर चीज का नाम लिखा.

फिर हेलेन मुड़ी और उसने एनी की ओर इशारा किया.

T-E-A-C-H-E-R (टीचर) एनी ने हिज्जे किए.

तब से, ऐनी के लिए हेलेन का नाम "टीचर" था.

उस गर्मी में, हेलेन ने बहुत सारे नए शब्द सीखे.

उसने अपने पुराने इशारों और संकेतों का इस्तेमाल करना बंद कर दिया.

उसे जो भी शब्द चाहिए थे वो उसे अपनी उंगलियों से मिल जाते थे.

एनी ने हेलेन को एक-एक शब्द नहीं सिखाया.

एनी, हेलेन से पूरे वाक्यों में बात करती थी.

इस तरह, हेलेन ने नए शब्दों के अलावा भी, बहुत कुछ सीखा.

उसने नए-नए विचार सीखे.

हेलेन और एनी ने जंगल और नदी के किनारे लंबी सैर की.

सैर करते समय भी एनी ने हेलेन को सबक सिखाए.

उसने हेलेन को बीज अंकुरित होते और पौधे बढ़ते हुए दिखाए.

एनी ने मिट्टी के पहाड़ बनाए और हेलेन को ज्वालामुखियों के बारे में सिखाया.

कभी-कभी वे दोनों किसी पेड़ पर चढ़कर बैठ जाते थे और वहीं उनकी क्लास चलती थी.

हेलेन में ज्ञान की ज़बरदस्त भूख थी.

हेलेन वो सब कुछ सीखना चाहती थी जो एनी उसे सिखा सकती थी.

जल्द ही एनी ने हेलेन को पढ़ना सिखाना शुरू किया.

नेत्रहीन लोगों की किताबों में शब्द उभरे हुए अक्षरों में छपे होते थे.

हेलेन ने अपनी उंगलियों से उन शब्दों को महसूस किया.

वो उन शब्दों का खोजना पसंद करती थी जिन्हें वो पहले से जानती थी.

जब वो बेहतर पढ़ना सीख गई फिर उसने अपनी किताबें बार-बार पढ़ीं.

उसकी जिज्ञासु उँगलियों द्वारा बार-बार छुए जाने से, ब्रेल के उभरे हुए अक्षर नीचे दब गए.
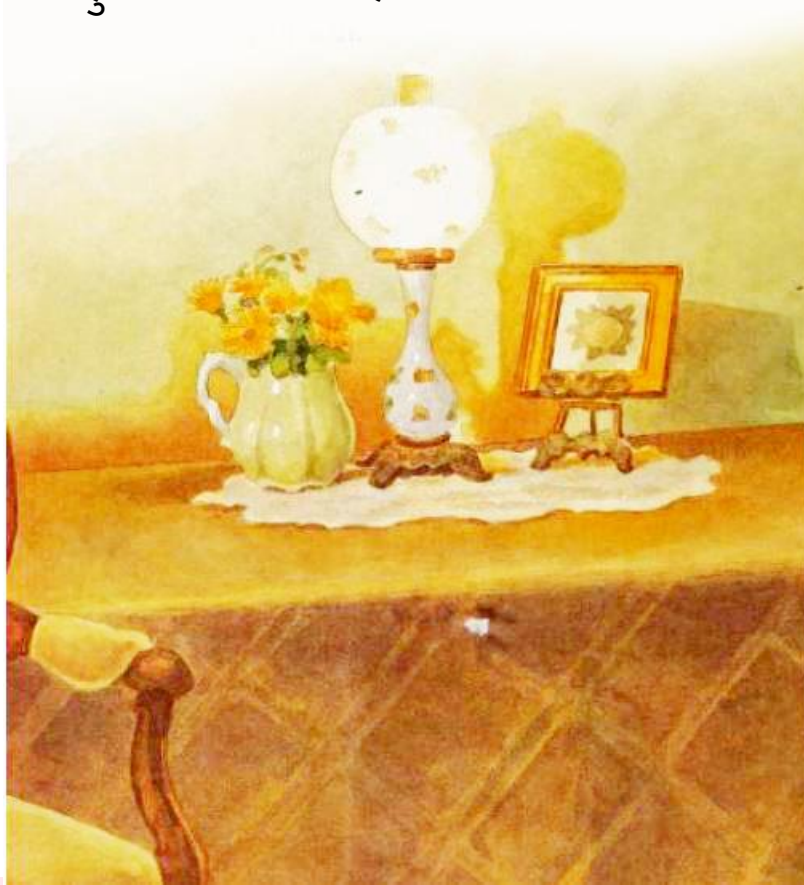
हेलेन ने लिखना भी सीखा.

उसने अपने परिवार और डॉ. बेल को पत्र लिखे.

उसने बोस्टन में मिस्टर एनाग्नोस को कई पत्र लिखे.

हेलेन इतना कुछ सीख पाई थी, इस बात से मिस्टर एनाग्नोस काफी चकित थे.

उन्होंने हेलेन के कुछ पत्र प्रकाशित किए.

उसके बाद पत्रकारों ने भी हेलेन के बारे में लिखना शुरू किया.

जल्द ही हेलेन प्रसिद्ध हो गई.

पूरी दुनिया में लोग, उस चमत्कारी लड़की के बारे में और जानना चाहते थे.

और हेलेन पूरी दुनिया के बारे में जानना चाहती थी.

यात्रा

मई 1888

आठ साल की हेलेन अपनी टीचर और मां के साथ ट्रेन में बैठी.

वो *पर्किन्स इंस्टीट्यूशन फॉर द ब्लाइंड* देखने के लिए बोस्टन जा रही थीं.

हेलेन उन सभी ग्रामीण इलाकों के बारे में जानना चाहती थी जो ट्रेन में उसके पीछे भाग रहे थे.

ऐनी ने खिड़की के बाहर जो भी देखा उसने वो सब हेलेन की हथेली पर लिखा.

उसने पहाड़ियों, नदियों, जंगलों और कपास के खेतों का वर्णन किया.

पर्किन्स स्कूल में हेलेन, मिस्टर एनाग्नोस से मिलीं.

वो उन बच्चों से भी मिलीं जो अपनी उंगलियों से बात करना जानते थे.

"दूसरे बच्चों से अपनी ही भाषा में बात करने में कितना आनंद आता है!" हेलेन ने लिखा.

हेलेन पहली बार समुद्र के पास गई.

इससे पहले उसने सिर्फ किताबों में ही समुद्र के बारे में पढ़ा था.

वो फौरन समुद्र के पानी में दौड़ी.

फिर वो एक चट्टान से टकराकर फिसल गई.

पानी जल्दी से उसके सिर के ऊपर से बहने लगा.

लहरों ने उसे आगे-पीछे फेंका.

ऐसा लग रहा था जैसे लहरें उसके साथ कोई खेल, खेल रही हों!

अंत में, वो संघर्ष करके किनारे की ओर आई.

वो कांप रही थी और हांफने से उसकी सांस फूल रही थी.

फिर वो अपनी टीचर के हाथ के लिए पहुंची. "पानी में नमक किसने डाला?" उसने पूछा.

उसे किसी ने यह नहीं बताया था कि समुद्र का पानी खारा होता था!
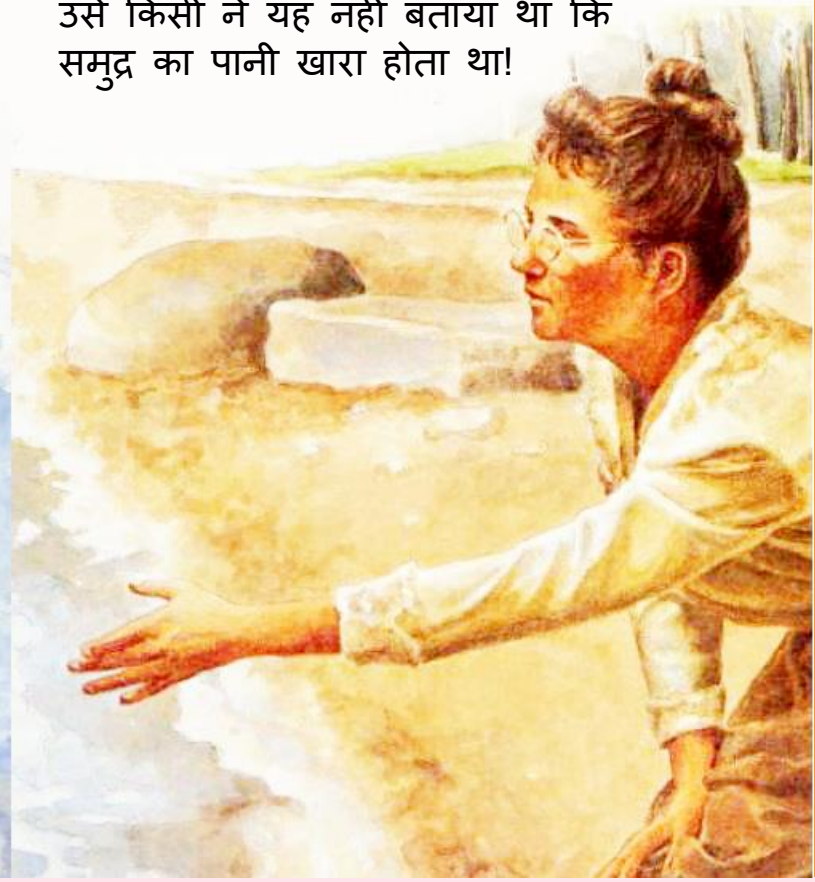
धीरे-धीरे हेलेन के लिए दुनिया खुल रही थी.

तीन साल में उसने अपनी ऊँगली से पढ़ना और लिखना सीख लिया था.

वो कुछ फ्रेंच और लैटिन भी जानती थी.

हर कोई हैरान था कि हेलेन ने कितना कुछ सीखा था.

लेकिन हेलेन और भी बहुत कुछ सीखना चाहती थी.

वो अन्य लोगों की तरह बोलना चाहती थी.

वो अपनी छोटी बहन से बात करना चाहती थी.

वो चाहती थी कि जब वो बुलाए तो उसका कुत्ता उसके पास आए.

उसने बात करने का तरीका खोजने में मदद करने के लिए एनी से विनती की.

जब हेलेन 10 साल की थी, तब एनी उसे बोस्टन के एक स्कूल में लेकर गई.

वहां की एक टीचर ने हेलेन को अपनी उंगलियों से लोगों के होंठ पढ़ना सिखाया.

हेलेन ने अपना हाथ एक वक्ता के होंठ, नाक और गले पर रखा.

उसने शब्दों को महसूस करना सीखा.

फिर उसने अपनी आवाज निकालने की कोशिश की.

लेकिन उनकी आवाज कभी भी सही नहीं निकली.

कुछ साल बाद, हेलेन ने न्यूयॉर्क शहर में बधिरों के एक स्कूल में प्रवेश किया.

हेलेन, न्यूयॉर्क से प्यार करती थी. वो और एनी सेंट्रल पार्क में घुड़सवारी करती थीं.

हेलेन अन्य छात्रों के साथ, स्लेज की सवारी करती थी.

एक बार वह "स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी" की चोटी पर चढ़ गई.

हेलेन, कई प्रसिद्ध लोगों से भी मिलीं.

जब वो लेखक मार्क ट्वेन से मिलीं, तो वे एक ही बार में दोस्त बन गए.

मार्क ट्वेन की मज़ेदार कहानियों ने हेलेन को इतना हँसाया कि वो रोने लगी.

फिर भी एक बात हेलेन को हमेशा दुखी करती रही.

उसने अपने भाषण को बेहतर बनाने के लिए दिन-रात काम किया.

लेकिन वो फिर भी साफ और स्पष्ट बोलना नहीं सीख पाई.

हेलेन ने फैसला किया कि वो अपनी निराशा को, अपने सपनों के साकार होने में आड़े नहीं आने देगी.

अधिक जानने के लिए

अक्टूबर 1896

16 साल की उम्र में, हेलेन एक युवा महिला थी.

वो ऊंची और ताकतवर थी.

उसकी हास्य-मज़ाक करने की आदत थी.

उसे नाव पर सवारी करना और तैरना पसंद था.

वो खुद नाव चला सकती थी.

वो किनारे पर उगने वाले पौधों की गंध सूंघती थी.

हेलेन ने हमेशा कॉलेज जाने का सपना देखा था.

कॉलेज की तैयारी के लिए हेलेन ने *कैम्ब्रिज स्कूल फॉर यंग लेडीज* में प्रवेश लिया.

अब तक, हेलेन बधिर या नेत्रहीन छात्रों के स्कूलों में ही पढ़ी थी.

इस नए स्कूल में, वो उन लड़कियों के साथ रहती थी जो देख और सुन सकती थीं.

अब वो खेल खेलती थी और उनके साथ लंबी सैर करती थी.

लेकिन उसके नए स्कूल में सभी छात्र उसके साथ एनी के माध्यम से ही बातचीत करते थे.

क्योंकि उन छात्रों को उँगलियों से बोलना नहीं आता था.

ऐनी, हेलेन के साथ सभी कक्षाओं में जाती थी.

वो पाठों को हेलेन के हाथ में लिखती थी.

हेलेन अन्य छात्रों की तरह नोट्स नहीं ले सकती थी.

लेकिन उसके हाथ "सुनने में व्यस्त" रहते थे.

हेलेन ने बहुत मेहनत से पढ़ाई की.

चार साल बाद, वो कॉलेज के लिए तैयार थी.

1900 के पतझड़ में हेलेन ने *रैडक्लिफ कॉलेज* में प्रवेश लिया.

वो कॉलेज जाने वाली पहली बधिर-नेत्रहीन छात्र थी.

हमेशा की तरह, हेलेन वो सब कुछ सीखना चाहती थी जो वो कर सकती थी.

उसने कई विषय पढ़े.

लेखन उसका सबसे प्रिय विषय था.

उसने समुद्र में अपनी पहली डुबकी के बारे में लिखा.

उसने लिखा कि कैसे वो बर्फ पर सूरज की रोशनी की चकाचौंध भी देख सकती थी.

एक पत्रिका के संपादक ने हेलेन की कहानियों के बारे में सुना.

संपादक जानता था कि अन्य लोग भी उन्हें पढ़ना चाहेंगे.

लोग उस लड़की के बारे में जानना चाहेंगे थे जो अपनी खामोश, काली, स्याह दुनिया से बाहर निकल चुकी थी.

संपादक ने हेलेन से उसकी पत्रिका के लिए उसके जीवन के बारे में लेख लिखने को कहा.

हेलेन ने उन कहानियों को एक किताब में बदल दिया.

उनकी किताब का नाम था - *"द स्टोरी ऑफ माई लाइफ"*.

वो किताब 1903 में प्रकाशित हुई.

अखबारों ने हेलेन की किताब की बहुत तारीफ की.

हेलेन के दोस्त मार्क ट्वेन ने उसे एक बधाई पत्र लिखा.

हेलेन दुनिया को बहुत कुछ बताना चाहती थी!

अंत में, उसे एक रास्ता मिल गया था.

उसकी किताब ने पूरी दुनिया को उसके अद्भुत जीवन के बारे में बताया.

अंत के शब्द

हेलेन ने 1904 में रैडक्लिफ कॉलेज से स्नातक की उपाधि प्राप्त की. उन्होंने अपना शेष जीवन बधिरों और नेत्रहीनों की मदद करने में बिताया. भले ही उन्होंने कभी भी उतने स्पष्ट रूप से बोलना नहीं सीखा जितना वो चाहती थीं, उन्होंने *अमेरिकन फाउंडेशन फॉर द ब्लाइंड* के लिए धन जुटाने के लिए व्याख्यान दिए. उन्होंने अपने जीवन और अपनी टीचर के बारे में लेख और किताबें लिखीं.

एनी सुलिवन की मृत्यु 1936 में हुई. एनी अपनी मृत्यु तक हेलेन के साथ ही रहीं. दोनों, लगभग 50 वर्षों तक एक-साथ रहीं. एक साल बाद, हेलेन ने नेत्रहीनों की ओर से, दुनिया का दौरा करना शुरू किया. अपने जीवन के अंत तक, उन्होंने 35 देशों की यात्रा की.

हेलेन लगभग अपने पूरे जीवन भर प्रसिद्ध रहीं. जब से वो आठ साल की हुईं, तब से वो अमरीका के हर राष्ट्रपति से मिलीं. उन्होंने अपने जीवन पर बनी दो फिल्मों में अभिनय भी किया. उनमें से एक, *द अनकॉनक्वेर्ड* ने 1955 में एक अकादमी पुरस्कार जीता. हेलेन और एनी के बारे में, एक प्रसिद्ध नाटक, *द मिरेकल वर्कर* भी लिखा गया.

हेलेन जहां भी जाती थीं, वो उनसे मिलने वाली भीड़ को मंत्रमुग्ध और चकित कर देती थीं. वो लोगों को याद दिलाती थीं कि कड़ी मेहनत से कोई भी अपना सपना सच कर सकता था.

महत्वपूर्ण तिथियाँ

1880—हेलेन एडम्स केलर का जन्म 27 जून को अलबामा के टस्कुम्बिया में हुआ.

1881—हेलेन एक बीमारी के बाद बहरी और अंधी हो गई.

1887—एनी सुलिवन, हेलेन को पढ़ाने के लिए टस्कुम्बिया आई.

1894—हेलेन स्कूल जाने के लिए न्यूयॉर्क शहर गईं.

1896—हेलेन ने *कैम्ब्रिज स्कूल फॉर यंग लेडीज़* में ट्रेनिंग ली.

1900—हेलेन ने *रैडक्लिफ कॉलेज* में प्रवेश किया.

1903—हेलेन की पहली पुस्तक, *द स्टोरी ऑफ माई लाइफ* प्रकाशित हुई.

1904—रैडक्लिफ कॉलेज से हेलेन ने स्नातक किया.

1924—हेलेन ने *अमेरिकन फाउंडेशन फॉर द ब्लाइंड* के लिए काम शुरू किया.

1936—एनी सुलिवन का निधन.

1964—राष्ट्रपति लिंडन जॉनसन द्वारा हेलेन को *स्वतंत्रता के राष्ट्रपति पदक* से सम्मानित किया गया.

1958—हेलेन का कनेक्टिकट में 87 वर्ष की आयु में 1 जून को निधन हुआ.

1996—*"द स्टोरी ऑफ माई लाइफ"* को न्यूयॉर्क पब्लिक लाइब्रेरी की *बुक्स ऑफ द संेचुरी* के लिए नामित किया गया.